

Class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Hon) Paper - I

Written by Ravishankar Kumar

R. B. G. R. College Meerut

① मक्ति-समय मक्ति-काल की राजनीति की स्थिति का प्र मूल्यांकन करें ?
उत्तर- पूर्व मध्यकाल (मक्ति-काल) का उदय दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51) के शासनकाल में हुआ। उत्तर से दक्षिण तक के अपने राज्य-विस्तार को ध्यान में रखकर उसने दिल्ली की अपेक्षा देवगिरि को अपनी राजधानी बनाने का यत्न किया और उसका नाम दीलवावाद रखना चाहा। इस प्रयास में दिल्ली प्रदेश स्वयं उजाड़ हो गया। उसने एक बार नांवे के सिक्के चलाए और कई बार सुदूर चीन पर आक्रमण की योजना बनायी। मित्र के खलीफा से उसने अपनी राज्यसत्ता के लिए धार्मिक स्वीकृति भी प्राप्त की। इन जैसी बातों के अतिरिक्त उनके अपने विशिष्ट गुण भी थे, जिसके कारण वह काफ़ी विद्याव्यसनी व पक्षपातरहित सुल्तान बन सका। उसके यहाँ विद्वानों की संरक्षण भी मिलता रहता था। हिंदू प्रजा के प्रति वह उदारमन था, किंतु उसके उत्तराधिकारी फिरोज तुगलक में धार्मिक सहिष्णुता की अभाव था इसलिये वह हिंदुओं पर पक्षपातरहित नहीं रह सका।

पालस्वरूप अवसर पाकर कई सुबेदारों
 ने विद्रोह कर दिया। उसका अग्र-
 दिकारी जीना सिंह था, जिसका
 उल्लेख मुल्ला दाउद ने 'चंद्रायन' में
 भी किया है। परवती सुल्तानों
 में से कोई बिगड़ती हुई स्थिति
 को संभाल न सका।
 तैमूरलंग की पांचवीं पीढ़ी
 में उत्पन्न बाबर वास्तव में तुर्क-
 वंशी भी था, मुगल नहीं।
 वह दृढ़तापूर्वक अपने शासना
 सामना करता रहा। उसने यह कि
 सैयदपुर वाली लड़ाई के अवसर
 पर गुरु नानकदेव पकड़े जाने पर
 उसके सामने उपस्थित किये गये
 थे। उसकी मृत्यु के पश्चात् हुमायु
 1530 ई. में बादशाह बना।
 हुमायु न केवल साहित्यकारों का
 सम्मान करता था बल्कि स्वयं का
 काव्य रचना करता था।
 हुमायु का उत्तराधिकारी अकबर
 बना। वह शिक्षित न रहते हुए
 भी उदार, सहृदय और व्यवहार
 कुशल था। वह कवियों एवं साहित्य
 कारों का सम्मान करता था।
 तानसेन, रहीम, कुंभनदास आदि इनके
 दरबारी कवि थे। अकबर का उत्तर-
 दिकारी जहांगीर बना। उसने युव-
 राजकाल में पिता के विरुद्ध
 विद्रोह करना चाहा, किंतु सफल
 नहीं हो सका। वह न्यायप्रिय था
 और उजा के सुख-दुख में उसकी
 रुचि थी।

Sub - Hindi (Hon) paper - 1 by
Ramesh Kumar (R.B. G.R. college)

भक्तिकाल की राजनीतिक स्थिति
इस प्रकार भारत के राज-
नीतिक क्षेत्र में सन् 1343 से 1643
तक की अवधि में दो प्रमुख
मुस्लिम वंशों पठान वंश और मुगल
वंश का आधिपत्य बना रहा।
इसमें लोदी, सैयद और तुगलक
वंश के सुल्तान विशेष रूप से
उल्लेखनीय हैं। इस काल में ऐसे
वंशों के व्यक्ति भी समय-समय
पर होते आये, जिन्हें किसी-न
किसी विद्रोह के फलस्वरूप अधि-
कार के न्यूनधिक अवसर प्राप्त
होते रहे।

मुगल बादशाहों ने पूर्ववर्ति
सुल्तानों की शासकीय कमियों से
सजग होकर उनसे अपना बचाव
किया और शासन व्यवस्था को
सुदृढ़ बनाया। बाबर की योग्यता
और सजगता ने सफल बनाने में
उसे पर्याप्त सहायता पहुँचायी।
वैसे मुगल में अकबर का राज्य
काल सभी दृष्टियों से सर्वोपरि
रह्य। उसकी सेना तत्कालीन सभी
उपकरणों से युक्त थी। सम्राट
अपने अधिकार का दुरुपयोग कभी
नहीं करता था। उसने शेरशाह की
योजनाओं से भी लाभ उठाया था।
जहाँगीर और शाहजहाँ ने भी बहुत
कुछ अकबर का अनुसरण किया।
वे पक्षपातरहित बने रहे।